--: षष्ठ परिच्छेद :--

Chapter - 6

-: षष्ठ परिच्छेद :- Chapter-6

परमाल रासो की वीरता-पूर्ण निर्झणी के परिप्रेक्ष्य में षष्ठ परिच्छेद प्रस्तुत है, जिसमें सिरसागढ़ का पराक्रम पूर्ण युद्ध, वीर मलखान की कपटपूर्ण रीति से हत्या, कीरतसागर का संग्राम, माहिल-पुत्र अभई की वीरगति, ब्रह्मानंद की पृथ्वीराज के साथ संग्राम तथा आल्हा मनौआ असंगों का उपक्रम है ।

सिरसागढ़ संग्राम :-

सिरसागढ़-नरेश वीर मलखान बच्छराज का पुत्र था, जिसके लघुभ्राता का नाम सुलखान सिंह था । यह आल्हा-ऊदल के मौसेरे भाई थे । शारदा के वरदानी अद्भुत पराक्रमी थे, जिनकी पराक्रमपूर्ण गाथाएँ आज भी बुन्देल खण्ड की पावनभूमि गाती है ।

सिरसागढ़,समथर §म.प्र.§ के पास लोहागढ़ से लगभग 10 कि.मी. एक स्थान है, जहां कभी पृथ्वीराज चौहान का पुत्र पारथसिंह राज्य करता था । राजा परमाल ने जब पृथ्वीराज को परास्त कर महोबा को राजधानी बनाया, उसके कुछ ही समय बाद आल्हा-ऊदल और मलखान की कृपाण की झंकारें झंकृत होने लगीं । परिणाम स्वरूप सिरसागढ़ पर विजय प्राप्त कर, मलखान ने अपना किला बनवाया । आल्हा-ऊदल को राजा चन्देल ने दशपुरवा में किला बनवा दिया था । इस प्रकार दस्सराज व बच्छराज पुत्र स्वतन्त्र होकर अपना-अपना शासन चला रहे थे । चूंकि महोबा मूलतः बासुदेव पुत्र माहिल की राजधानी था । राजा चन्देल ने रानी मल्हना से विवाह करने के लिए बासुदेव की हत्या कर दी थी तथा माहिल को महोबा से निकाल कर उरई की जागीर दे दी थी, अस्तु, माहिल के दिल में सर्वथा प्रतिहिंसा व ईर्ष्या की अग्नि प्रज्वलित होती रहती थी ।

राजा चन्देल ने नाराज होकर आल्हा-ऊदल को महोबा से निष्कासित कर दिया था और वह राजा जयचन्द के यहां कन्नौज में आश्रय पाकर अपने दिन व्यतीत कर रहे थे तथा राजा के कार्यभार में सहायता कर रहे थे । माहिल को यह स्वर्णिम अवसर मिल गया । आप अपनी घोड़ी §लिल्ली§ पर सवार होकर दिल्ली की ओर रवाना हो गए । दिल्ली में पृथ्वीराज चौहान के दरबार में पहुँच कर उन्होंने निवेदन किया कि—

बोले माहिल तब राजा से, तुम सुनि लेउ वीर चौहान ।
आल्हा-ऊदल कनवज छाए, सूनो परो महोबा गाँव ।
लश्कर सजवाओ जल्दी से, ऐसो समय न बारम्बार ।
अकिले मलिखे हैं सिरसा में, तुमसें लड़ैं न पैहैं पार ।
पहिले लूटि लेउ सिरसा को, फिरि महुबे को लेउ लुटाय ।§1§

पृथ्वीराज चौहान स्वयं भी राजा परमाल तथा बनाफरों से ईर्ष्या रखते थे, क्योंकि राजा चन्देल ने महोबा के प्रथम संग्राम में पृथ्वीराज को परास्त कर दिया था । इसके अतिरिक्त सर्वप्रथम महोबा पर राजा पृथ्वीराज का अधिकार था । ऐसा इतिहास के अनुसार माना जाता है । अतः पृथ्वीराज चौहान व माहिल दोनों के लिए यह सुन्दर अवसर था । माहिल की चुगली से रंजित होकर पृथ्वीराज ने अपनी सेना को तैयार होने का आदेश दे दिया । आदि भयंकर नाम के हाथी को तैयार करवाया, जो उनकी खास सवारी था । इसके अतिरिक्त ताहरसिंह, चांमु, सारथसिंह, चन्दनसिंह, धीरसिंह आदि बेटों के साथ ब्राह्मणपुत्र चौड़ियाराय देवी का वरदानी आदि सिरसा-गढ़ के संग्रामकी तैयारी में लग गए । इस प्रकार पृथ्वी की कुल मिलाकर सात लाख सेना तैयार होकर सिरसा के लिए प्रस्थान कर गई । माहिल मार्ग-दर्शक थे ही ।

सिरसागढ़ के धूरे पर पहुँचकर दिल्ली सेना ने पड़ाव डाल दिया । तत्पश्चात दिल्लीपति ने महा पराक्रमी चौड़ियाराय को सिरसा का किला ध्वस्त करने का आदेश दे दिया । चौड़ियाराय ने सैन्यबल के साथ सिरसा के किला की घेराबन्दी करली जब मलखान को पता चला, कि पृथ्वीराज की सेनाओं ने सिरसा का किला घेर लिया है, तो उन्होंने अपने छोटे भाई सुलखान को सेना तैयार करने का आदेश दे दिया । कुछ ही समय में मलखान की कटीली सेना सजकर तैयार हो गई । जब मलखान अपनी प्रिय घोड़ी कबुतरी पर सवार होने लगे तो अपशकुन हुआ । उस समय उनकी माता ब्रह्मा ने उन्हें मना भी किया, परन्तु जिस मातृभूमि ने ऐसे विकराल वीरों को रचा है अपना इतिहास लिखने के लिए जन्मा है, वे इन अपशकुनों की कब परवाह करते हैं । अतः मलखान अपनी माता को समझाबुझाकर पीड़ा की सेना का सामना करने के लिए उद्यत हो जाता है ।

---

§1§ बड़ा आल्हखण्ड : पृ.सं. 434.

<u>चौंड़ा ब्राह्मण और मलखान का युद्ध :-</u>

एक ओर देवी शारदा का वरदान प्राप्त चौड़िया राय, दूसरी ओर अमर-गुरु का वरदान प्राप्त वीर मलखान । मलखान, चौंड़ा के सम्मुख आकर उससे अनायास सिरसागढ़ घेरने का कारण पूंछते हैं । उनमें आपस में वार्तालाप होता है । एक दृश्य द्रष्टव्य है :-

समुहे देखो जब मलिखे को, तब चौंड़ा ने कही सुनाय ।
हुक्म दियो है प्रथीराज ने, सिरसा किला देव गिरवाय ।
यह सुनि मलिखे बोलन लागे, ब्राह्मण सुनो हमारी बात ।
अपने बल हम किला बनायो, सो कैसे अब देय गिराय ।
होय पराक्रम पिरथीराज में, हमरो किला देयं गिरवाय ।
मारौं खेदि-खेदि दिल्ली लौं, टट्टुआ टायर लेउं छुड़ाय ।§1§

वीरों की आन और मातृभूमि की मर्यादा का प्रश्न था । दोनों योद्धा आक्रोश में आ जाते हैं । तोपची आदेश पाकर तोपों में बत्ती लगा देते हैं । तोपों की गड़गड़ाहट से आकाश फटने लगता है । आसमान में धुएँ के बादल मंडराने लगते हैं । कुछ समय तक तोपों की लड़ाई चलती है तत्पश्चात बरछी, भाला, तीरों और तलवारों का युद्ध प्रारम्भ होता है । दोनों ओर के योद्धा अपने-अपने रण-कौशल का परिचय दे रहे थे ।

वीर मलखान घोड़ी कबूतरी पर आरूढ़ होकर भीषण नर-संहार कर रहे थे । अपनी सेना के वीरों का उत्साह-वर्धन व युद्ध का नेतृत्व तथा संचालन कर रहे थे । भीषण संहार देखकर चौड़ियाराय और मलखान आमने-सामने उपस्थित होते हैं । सर्वप्रथम मलखान, चौंड़ा से अपनी शक्ति प्रहार करने का अह्वान करते हैं । चौंड़ा के समस्त प्रहारों को मलखान नाकाम कर देता है । अब मलखान के अस्त्र-प्रहार से ब्राह्मण-पुत्र भयभीत हो जाता है । मलखान के प्रहार से उसकी ढाल कट जाती है । वह हाथी एकदन्ता से नीचे गिर जाता है । क्षात्र धर्म के अनुसार वीर मलखान उसका बध नहीं करते हैं अपितु उसे बन्दी बना लेते हैं ।

ब्राह्मण-पुत्र को बन्दी बनाकर मलखान अपने किले में आते हैं और उसकी नारी वेशभूषा बनाकर, पालकी में बैठाकर पृथ्वीराज की सेना में भेजने का निश्चय करते

---

§1§ सिरसागढ़ समर : अमोल सिंह, पृ. 75, 76.

हैं । यथा :-

बाँधि जंजीरन लियो चौड़ा को, अपने गढ़ में राखो जाए ।
चुरियां बिछिया त्यहि पहराई, औ करि दियो जनाना वेष ।
माथे बिंदी दियो चौड़ा के, नाक नथुनिया दई पहिराय ।
डंड बाँधि के उन चौड़ा को, सेंदुर मांग दियो भरवाय ।
एक पालकी तुरत मंगाई, तामें ताहि दियो बैठाय ।§1§

इस प्रकार जनाना भेष बनाकर चौड़ा को मलखान पृथ्वीराज के पड़ाव में भेज देते हैं । साथ में सिपाहियों को यह आदेश दे देते हैं कि पृथ्वीराज से कहना, कि- चौड़ा ने सिरसागढ़ में विजय प्राप्त कर ली है । यह चन्द्रावली की डोली हैं । सिरसागढ़ लूट लिया गया है आदि ।

जब पृथ्वीराज की सेना में पालकी आती है तो वह अत्यन्त प्रसन्न हो जाते हैं । सिपाहियों की बात सुनकर उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहता है । परन्तु जब वह पालकी का परदा हटा कर देखते हैं, तो चौड़ा को पाते हैं । वह चौड़ा को धिक्कारते हैं । ब्राह्मण पुत्र लज्जित हो जाता है । इधर मलखान की विजय का डंका बजने लगता है । ब्राह्मण-पुत्र पृथ्वीराज को सारी घटना से अवगत कराता है । चौहान मलखान का अद्भुत पराक्रम सुनकर दंग रह जाते हैं । उन्हें चौड़ा की शक्ति और साहस पर पूर्ण भरोसा था । अब उनका आश्चर्य, आक्रोश में परिणित हो जाता है । और वह अपने महा पराक्रमी बेटा पारथसिंह को याद करते हैं ।

पारथसिंह और मलखान सिंह की लड़ाई :-

महा पराक्रमी योद्धा चौड़ा ब्राह्मण की शर्मनाक पराजय से दिल्ली-पति पृथ्वीराज चौहान अत्यन्त क्रुद्ध हो जाते हैं तथा अपने महाबलशाली पुत्र पारथसिंह से मलखान की सेना का सामना करने का प्रस्ताव करते हैं । कहा जाता है, कि पारथ को देवी का वरदान प्राप्त था, कि उसका शरीर दिन में बज्र का रहेगा और रात्रि में मोम का हो जाएगा । उसे इस वरदान पर गर्व भी था । वह स्वयं को अजेय मानता था ।

अपने पिता की आज्ञा पाकर पारथ सिरसा-नरेश की सेना का सामना करने

---

§1§ बड़ा आल्हखंड : पं. महावीर प्रसाद जी, पृ. 438.

के लिए तैयार हो जाता है । विशाल लश्कर के साथ वह रण भूमि में पदार्पण करता है । वह अपनी सेना के महान वीरवर चौड़ियाराय के घोर अपमान का भी बदला लेना चाहता था । अस्तु, वह युद्धभूमि में मलिखान को ललकारता हुआ आगे बढ़ता है । मलखान भी अपने सैन्यबल के साथ पारथ की सेना का सामना करते हैं । दोनों वीर अपने-अपने पराक्रम का सफल परिचय दे रहे थे । दोनों ही एक दूसरे के अस्त्रों का प्रहार बड़ी सावधानी से नाकाम करते जा रहे थे । देवी भवानी के वरदान के परिणाम स्वरूप पारथ के शरीर पर मलखान द्वारा किए गए सारे प्रहार प्रभावहीन हो जाते थे ।

इस प्रकार लगातार सात दिन तक मलखान और पारथ का युद्ध चलता रहा । दोनों ओर के हजारों सैनिक रण-शैय्या पर चिरनिद्रा में सो गए । अब मलखान को बड़ी चिन्ता हुई । रणनीति के अनुसार सायंकाल युद्ध बन्द हो जाता था । महाभारत व राम-रावण युद्ध में भी इस प्रकार के संकेत मिलते हैं । वास्तव में तत्कालीन युद्ध-परम्परा की अपनी एक अलग नैतिक गरिमा थी । संध्या समय जब मलखान अपने महल में गए, तो उनकी पत्नी गजमोतिनने अपने स्वामी के मस्तिस्क पर चिन्ता का भाव देखा ।

रानी गजमोतिन (मलखान की पत्नी) ने अपने स्वामी से चिंता का कारण जानना चाहा । पहले तो उन्होंने बताने से इंकार कर दिया, परन्तु बाद में सारा हाल कह सुनाया । रानी गजमोतिन नीति-निपुण एवं जादू की विधा में पारंगत थी । भविष्य, वर्तमान व भूत के बारे में भी उसे कम जानकारी न थी । उसने मलखान को उचित सलाह दी और कहा :-

बोली गजमोतिन मलिखे सें, हम एक जतन देयं बतलाय ।
दिन भर देही पाथर रहिहै, सन्ध्या समय मोमसम जान ।
कालिह लड़ाई करौ रात में, तुम्हरो काम सिद्ध होइ जाय ।(1)

प्रातः काल होने पर मलखान ने पुनः रणक्षेत्र में अपना मोर्चा जमा लिया । पूरे दिन दोनों योद्धाओं में भयंकर युद्ध हुआ । संध्या समय पारथ अपना मोर्चा हटाने लगा, तो मलखान ने उसे उत्तेजित करने के लिए और रात्रि में युद्ध करने हेतु विवश करने के लिए इस प्रकार कहा, कि—

मुर्चा फेरि दियो पारथ तुम, संध्या काल रह्यो नियराय ।

---

(1) सिरसागढ़ समर : कुँवर अमोलसिंह, पृ. 92.

भारी जोधा हो पारथ तुम, क्यों समुहें ते चले बराय ।
धर्म नहीं हैं यह क्षत्रिन के, जो हटि धरे पिछारन पाय ।
युद्ध अघाय करौ हमरे संग, हौ तुम वीर पिथौरालाल ।§1§

इस प्रकार मलखान के चुनौती पूर्ण बचनों को सुनकर वीर पारथ में स्वाभिमान की भीषण भावना बलवती हो जाती है । अतः वह मलखान का सामना करने के लिए तैयार हो जाता है । रात्रि में दो पहर तक युद्ध चलता है । अन्त में मलखान का गुर्ज-प्रहार पारथ को ठन्डा कर देता है । मलखान, पारथ का सिर काटकर अपने लश्कर में भेज देते हैं । रण भूमि में मलखान की विजय का डंका बज जाता है । पारथ की मृत्यु से भयभीत होकर उसकी सेनाएँ मोर्चा हटाकर पलायन करने लगती हैं । इस महान योद्धा की पराजय से सिरसागढ़ में प्रसन्नता की लहर दौड़ जाती है । नाना प्रकार के जश्न मनाए जाते हैं । मलखान की विजय पर उनकी माता ब्रह्मा उन्हें आशीष व बधाइयाँ देती है । सुलखान आदि प्रफुल्लित हो जाते हैं । परन्तु इस घटना का समाचार मिलते ही दिल्ली-सेना में शोक के बादल छा जाते हैं ।

धीरसिंह और मलखान का युद्ध :-

पारथ की पराजय व मृत्यु से पृथ्वीराज चौहान के दिल में गहरा धक्का लगता है, क्योंकि उन्हें पारथ के पराक्रम पर पूर्ण विश्वास था । वह उसे अजेय मानते थे । अतः वह व्याकुल हो जाते हैं ।

पृथ्वीराज मन में विचार करते हैं कि मलखान कोई सामान्य योद्धा नहीं है । वह अपनी सेना में अपनी विजय के संदर्भ में, एक सभा का आयोजन करते हैं । साथ ही तम्बू में एक पान का बीड़ा रखकर यह घोषणा करते है, कि- जो वीर मलखान को पराजित कर, बन्दी बना सके, वह इस बीड़ा को ग्रहण करे । बीड़ा को उठाकर ग्रहण करना बड़ी बात थी, कोई उसकी ओर देख भी नहीं रहा था, क्योंकि चौंड़ा ब्राह्मण का घोर अपमान और पारथ की मृत्यु ने सभी योद्धाओं को भयभीत कर दिया था । जब किसी योद्धा ने दिल्लीपति की चुनौती स्वीकार नहीं की, तो उन्होंने अपने पुत्र धीरसिंह को बुलाया और उसे मलखान को बन्दी बनाने का आदेश दिया ।

अपने पिता की बात मानकर धीरसिंह कुछ खास सैनिकों को लेकर, स्वयं हाथी

---

§1§ बुन्देलखण्ड का मध्ययुगीन काव्य : अनुशीलन §नर्मदाप्रसाद गुप्त§, पृ. 215.

पर सवार होकर सिरसागढ़ के किले की ओर प्रस्थान करता है । किले के मुख्य द्वार पर पहुँचकर दरबानी धीरसिंह से प्रश्न करता है । धीरसिंह उसका उत्तर देते हैं । परन्तु मलखान की आज्ञा के अनुसार उन्हें हाथी पर सवार होकर नहीं, घोड़े पर सवार होकर जाना पड़ता है । किले के दूसरे द्वार पर पुनः धीरसिंह पहरेदार द्वारा रोक लिए जाते हैं और पहरेदार के निर्देशन के अनुसार उन्हें पैदल ही मलखान के दरबार में जाना पड़ता है ।

मलखान के दरबार में पहुँचकर धीरसिंह चकित रह जाते हैं । सिरसागढ़ के राजदरबार में बड़े-बड़े क्षत्री विराजमान थे । नर्तकी नृत्य कर रही थी । मध्य में विशाल, भव्य एवं ऊँचे सिंहासन पर वीर सिरसा-नरेश मलखान विराजमान थे । दरबार की शोभा एवं वैभव को देखकर धीरसिंह दाँतों तले अंगुली दबा लेते हैं । अपने दरबार में पिरथी-पुत्र धीरसिंह को देखकर मलखान उनका उचित सम्मान कर, यथोचित आसन प्रदान करते हैं । अब धीरसिंह अपने मनोभावों को व्यक्त करते हुए मलखानसिंह को पृथ्वीराज से मिलने और उनकी अधीनता स्वीकार करने की बात कहते हैं । धीरजसिंह की बात सुनकर मलखान आग बबूला हो जाते हैं । वे कहते हैं कि- क्षत्री केवल तलवार से रणभूमि में मिलता है । मैं किसी योद्धा से नहीं डरता । वह धीरसिंह को स्पष्ट शब्दों में उत्तर देते हैं, कि—

फिरिकैं ज्वाब दियो मलिखे ने, हठना करौ हमारे साथ ।
सात लाख से पिरथी आए, चाहें चढ़े पचासी लाख ।
करैं अधीनी न पिरथी की, हमको कौन पड़ी परवाह ।
करैं खुशामद जो काहू की, हमरो क्षत्री धर्म नशाय ।
हमहिं भरोसा है अपने बल, जब तक हाथ रहै तलवारि ।§1§

वीर मलखान का दो टूक जवाब सुनकर धीरजसिंह व्याकुल हो जाते हैं । उन्हें इस बात का अनुभव होने लगता है, कि मलखान अब हमारी बात नहीं मानेगा और मैं अपनी पिता-आज्ञा का पालन करने में असमर्थ रह जाऊँगा । अस्तु, वह अपनी शक्ति का परिचय देता है । भरे दरबार में सांग उठाकर पृथ्वी पर गाड़ देता है । मलखान यह जानते थे, कि धीरसिंह भी दैवीय वरदानी है । सोच-समझकर वह अपनी इष्ट-देवी, मनियादेव महोबा वाली का स्मरण करते हैं और धीरजसिंह की चुनौती को स्वीकार करते हुए

§1§ बड़ा आल्हखंड, पृ. 443.

सांग जमीन से उखाड़ देते हैं । यह देखकर धीरजसिंह दंग रह जाता है क्योंकि उसका विश्वास था, कि मलखान सांग नहीं उखाड़ पाएंगे । परिणामतः उन्हें मेरे साथ पृथ्वीराज के लश्कर में चलना पड़ेगा क्योंकि यह सांग मलखान के लिए चुनौती का प्रतीक था।

इस प्रकार धीरसिंह लज्जित होकर अपने लश्कर में वापस आने के लिए सिरसा के किला से प्रस्थान करते हैं । पृथ्वीराज के समक्ष उपस्थित होकर सारा हाल-वर्णन करते हैं । वह अपने पुत्र की नाकामी पर संताप व्यक्त करते हैं । मन ही मन मलखान की वीरता की प्रशंसा भी करते हैं । अब पृथ्वीराज के पास मलखान से द्वन्द्व-युद्ध करने के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं रहता है । बिना उद्देश्य की पूर्ति के वापस दिल्ली लौटना कायरता का प्रतीक था । अतः युद्ध ही मात्र उपाय था ।

मलखान विजय और सुलखान की वीरगति :-

सात लाख सैन्य बल के साथ आक्रमण करने वाले दिल्ली-पति महाराज पृथ्वीराज चौहान, चौंडा के अपमान, पारथ की हत्या एवं धीरजसिंह की असफलता के कारण अत्यन्त लज्जित तथा क्रोधित हो चुके थे । अतः उन्होंने अपने सभी बेटों तथा अन्य प्रमुख योद्धाओं को एक ही साथ तैयार होने का आदेश दे दिया । इन सहायकों में ताहर, चन्दन, धांधू, भौंरानन्द आदि वीर सम्मिलित थे । विशाल सेना एवं पराक्रमी वीरों द्वारा चढ़ाई करने का समाचार पाकर सिरसा-नरेश ने भी अपने भाई सुलखान सहित अपनी कटीली सेना को युद्ध के लिए तैयार होने का आदेश दे दिया । कुछ ही अन्तराल में सिरसा की सेनाएँ अस्त्र-शस्त्रों से युक्त होकर युद्ध भूमि की ओर प्रस्थान करने का इन्तजार करने लगीं ।

दोनों सेनाएँ रणक्षेत्र में उपस्थित हो जाती है । मलखान, पृथ्वीराज के सम्मुख आकर सम्मान पूर्वक अभिवादन करते हैं । यह प्राचीन युद्ध धर्मिता का परिचायक है । यही भारतीय संस्कृति की अवधारणा भी है, कि हम अग्रज दुश्मन को भी सम्मान देते हैं । यथा :-

> सम्मुहें देखो नर मलिखे को, पिरथी हाथी दियो बढ़ाय ।
> बोले पिरथीराज मलिखे से, क्यों यह किला लियो बनवाय ।
> किला गिराय देव अबहीं तुम, इतनी मानो कही हमार ।
> इतनी सुनते नर मलिखे ने, पृथ्वीराज को करी सलाम ।

बोले मलखे पृथ्वीराज से, तुम सुनि लेउ वीर चौहान ।
धरती अंजर हम यह देखी, तब यह किला लियो बनवाय ।
किला बनायो हम अपने बल, सो हम कैसे देयं गिराय ।[1]

इस प्रकार दोनों महायोद्धाओं में वार्तालाप होता है, परन्तु निर्णय शान्ति का नहीं निकलता है, निर्णय निकलता है भीषण संग्राम का । दोनों सेनाओं में युद्ध प्रारम्भ हो जाता है । तोपों की धाँए-धाँए से आसमान फटने लगता है । सूर्य अन्धकार में विलीन हो जाते हैं । खून की होली खेली जाने लगती है । रणचण्डी शोणित में अवगाहन करने लगती है । शंकर का डमरू बजने लगता है ।

सुलखान के मोर्चा पर चन्दनसिंह (पृथ्वीराज का पुत्र) थे । दोनों अपने-अपने रणकौशल का परिचय दे रहे थे । दोनों एक दूसरे के प्रहारों को नाकाम कर रहे थे । अन्त में सुलखानसिंह (मलखान का छोटा भाई) के गुर्ज के प्रहार से चन्दनसिंह रणभूमि को प्यारे हो जाते हैं । ताहर अपने भाई चन्दन की दशा देखकर आग-बबूला हो जाते हैं । वह पूर्ण वेग के साथ सुलखान का सामना करता है । सुलखान बड़ी वीरता के साथ ताहरसिंह को अपना परिचय विभिन्न अस्त्र-शस्त्रों के माध्यम से देता है । अन्त में ताहर के प्रहार से सुलखान भी मातृभूमि की गोदी में चिरनिद्रा में सो जाते हैं ।

अपने सहोदर भ्रात सुलखान की वीरगति देखकर मलखान क्षुब्ध हो जाते हैं । दूसरे ही क्षण क्षुब्धता आक्रोश में परिणित हो जाती है और वह पूर्ण जोश के साथ शत्रु की सेना पर टूट पड़ते हैं । मलखान की झपेटों से शत्रु-सेना के छक्के छूट जाते हैं । वह नेमिबार के राजा अंगदसिंह, राजा सूरतसिंह हाड़ावाला, राजा चन्द्रसेन आदि बड़े-बड़े पराक्रमी वीरों को धराशायी कर देता है । उसके अचूक प्रहारों से दिल्ली-सेना में खलबली मच जाती है । पृथ्वीराज चौहान मलखान की वीरता व भीषण नर-संहार को देखकर हतप्रभ हो जाते हैं । उन्हें अपने मुँह की खानी पड़ती है । उनकी सेना भागने लगती है । परिणाम स्वरूप चौहान अपना मोर्चा पीछे हटा लेते हैं । वह मन ही मन माछिल पर कुपित भी होते हैं ।

अपनी पराजय की परिस्थितियाँ देखकर, दिल्ली-नरेश चौहान युद्ध-बन्दी का

- -

(1) सिरसागढ़ संग्राम : कुँवर अमोलसिंह, पृ. 105, 106.

आदेश देते हैं । मलखान को विजयश्री मिलती है । उसकी सेना में जीत का डंका बजने लगता है । दिल्ली की सेनाएँ पराजय हाथ लेकर अपने मुकाम की ओर वापस प्रस्थान कर देती है । परन्तु पृथ्वीराज चौहान की पराजय मात्र उनके लिए पराजय नहीं थी, अपितु घोर अपमान था । यह अपमान का काँटा उनके जिगर में बराबर चुभ रहा था । इधर मलखान विजय का सेहरा बाँधकर सिरसा की ओर प्रस्थान करते हैं । हाँलाकि वे इस भीषण संग्राम में अपने सहोदर की बलि चढ़ा चुके थे तथापि जनता व सिरसा के लिए यह गौरव की बात थी ।

मलखान की माताश्री ब्रह्मा अपने वीर बेटे के सिर का चुम्बन करके आशीर्वाद देती है । महलों में जाकर रानी गजमोतिन अपने विजयी स्वामी की आरती उतारती है।

वीर मलखान की वीरगति व गजमोतिन सती :-

कहा जाता है कि बासुदेव-पुत्र माहिल ही परमाल रासो की कथा का विस्तारक है, अर्थात परमाल की बावनगढ़ विजय माहिल की चुगली का परिणाम थी । माहिल का अपना स्वभाव या ईर्ष्या इसका कारण हो सकती है । परन्तु माना ऐसा ही जाता है, कि युद्ध का कारण माहिल की कूटनीति या चुगली हुआ करती थी ।

सिरसा-नरेश मलखान ने जब पृथ्वीराज की सात लाख सेना को खदेड़ दिया और वह दिल्ली वापस कूच कर गई, तो माहिल के उद्देश्य की पूर्ति नहीं हुई । अस्तु वह सिरसा के महल में गया । वहाँ जाकर अपनी बहिन ब्रह्मा [मलखान की माता] के महल में गया । उन्हें युद्ध का सारा समाचार सुनाया तथा बधाइयाँ दी । उसने अपनी राजधानी उरई की कुशलता का समाचार भी सुनाया । माहिल ने कहा- कि बहिन, संग्राम में वीर मलखान की विजय हुई है । पृथ्वीराज की सेनाएँ पराजित होकर दिल्ली वापस चली गई हैं, किंतु वीर सुलखान वीरगति को प्राप्त हो गए है । माहिल की बात सुनकर रानी ब्रह्मा ने कहा, कि- जब तक मलखान के पैर के तलवे में पदम है तब तक उसे कौन मार सकता है । माहिल के उद्देश्य की पूर्ति हो चुकी थी । वह तो मलखान की मृत्यु का रहस्य जानना चाहता है, परन्तु रानी ब्रह्मा माहिल की छल-कपट प्रवृत्ति को न समझ सकी ।

माहिल रात्रि का विश्राम करके प्रातः अपनी घोड़ी पर सवार होकर पुनः दिल्ली की ओर रवाना हो गए । दिल्ली पहुँचकर उसने सारा भेद पृथ्वीराज को

बताया । पृथ्वीराज चौहान मलखान की मृत्यु का रहस्य सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ क्योंकि वह जानता था कि मलखान अजेय है । माहिल ने यह भी बताया कि सिरसागढ़ के मैदान में गहरे-गहरे गड्ढे खोदकर उनमें भाले-बरछे गाड़ दिए जाएं तथा उनके ऊपर घास-फूस बिछा दी जाए । इस प्रकार मलखान इन खंदकों से अनभिज्ञ रहेगा । जब वह समर भूमि में युद्ध करने आएगा तो वह इन खंदकों में गिर जाएगा । परिणाम स्वरूप उसके पैर के तलवे में भाला-बरछा चुभ जाएगे, जिससे पदम फट जाएगा और उसकी मृत्यु हो जाएगी ।

यही हुआ । महाराज पृथ्वीराज चौहान ने गड्ढे खोदने वालों को आदेश दिया कि सिरसागढ़ के समर-क्षेत्र में विशेष प्रकार के बड़े-बड़े खंदक खोदकर उनमें भाले-बरछे गाड़ दिए जाएं तथा उनके ऊपर घास-फूस व मिट्टी डाल दी जाए । यही हुआ, एक ही माह के अन्तराल में पृथ्वीराज के आदेश का अक्षरशः पालन कर दिया गया । इधर चौहान-नरेश ने पुनः विशाल सेना के साथ सिरसा पर आक्रमण करने की तैयारी करदी और आदि भयंकर मस्त हाथी पर सवार होकर पृथ्वीराज चौहान अपने पुत्रों तथा चौड़ा ब्राह्मण सहित एवं सैन्यबल के साथ सिरसागढ़ के लिए प्रस्थान कर दिया । वहां पहुँचकर मोर्चा-बन्दी कर दी ।

उधर मलखानसिंह को दूत द्वारा जब यह मालूम हुआ कि पृथ्वीराज ने पुनः विशाल सेना के साथ आकर मोर्चा-बन्दी करदी है, तो वह भी कहां रूकने वाले थे । क्षत्री धर्म, राज धर्म तथा मातृ भूमि की मर्यादा का प्रश्न था । एक वीर की गरिमा युद्ध करना ही होती है । अतः सैन्यबल के साथ देवी का स्मरण करके मलखान भी रणक्षेत्र के लिए तैयार हो गया । जैसे ही वह अपनी प्रिय घोड़ी कबूतरी पर सवार हुआ वैसे ही अपशकुन हुआ । उनकी माता व पत्नी गजमोतिन ने युद्ध भूमि में जाने हेतु मना भी किया। परन्तु मलखान कहां मानने वाला था । उसके सामने तो मर्यादा का प्रश्न था तथा तलवारों की झंकार उसे रणभूमि में याद कर रही थी । वह रणभूमि में जाकर भीषण नर-संहार प्रारम्भ कर देता है । पृथ्वीराज का पुत्र ताहरसिंह वीर मलखान का सामना करता है । परन्तु उसे अपने मुँह की खानी पड़ती है । वीर मलखान के रण-कौशल से हजारों हाथी खाली हो जाते हैं । दिल्ली की सेना के पांव उखड़ने लगते हैं । मलखान तीव्र गति से शत्रुसेना के वीरों का वध करता हुआ आगे बढ़ता जा रहा था । वह पृथ्वीराज चौहान के सम्मुख जाकर उन्हें ललकारता है । पृथ्वीराज प्रलयंकारी वीर के घातक प्रहारों

को देखकर भयभीत हो जाते हैं । सिरसागढ़ ध्वस करने की बात तो दूर रही, उन्हें स्वयं का संभालना भारी पड़ जाता है । वह कहने लगते हैं, कि तुम्हारा प्रतिद्वन्दी ताहर है, तुम उससे युद्ध करो ।

मलखान अपनी घोड़ी को एड़ लगाता है और ताहर पर पुनः घातक हमला करने की सोचता है । घोड़ी लम्बी छलांग मारती है और पहले से खोदे गए खंदे में समाहित हो जाती है । मलखान के पैर के तलवे में पहले से गाड़े गए नुकीले अस्त्र घुस जाते हैं जिससे उनका पदम फट जाता है । मलखान धीरे-धीरे मूर्छित होने लगते हैं । वह अपनी माता तथा माहिल दोनों को धिक्कारते हैं । कारण, माता ने अनजाने में मृत्यु का रहस्य बताया था तथा माहिल ने उसका लाभ उठाया था । घोड़ी जोश लगाकर खंदक से बाहर निकलती है । मलखान को मरणासन्न जानकरआँसू बहाने लगती हैं।

धावन द्वारा मलखान की कपट-पूर्ण मृत्यु का समाचार महलों में पहुँच जाता है । पहले तो किसी को विश्वास ही नहीं होता है कि मलखान वीरगति को प्राप्त हो गए । बाद में रानी गजमोतिन तथा मलखान की माँ ब्रह्मा रणक्षेत्र में पालकी पर सवार होकर आती है । तब घोड़ी कबूतरी मलखान के शव की रक्षा कर रही थी । दोनों आकर विलाप करने लगती है । तब तक पृथ्वीराज मलखान के शव के पास आकर अतिक्रमण करने की सोचते हैं, परन्तु रानी गजमोतिन के तेज को देखकर भयभीत हो जाते हैं । गजमोतिन पृथ्वीराज से कहती हैं कि—

> तब ललकारो गजमोतिन ने, तुम सुनि लेव वीर चौहान ।
> तुम यह जानी अपने मन में, मारे गए वीर मलखान ।
> खोदि के मरि हौं मैं दिल्ली लौं, नगर कटा देहौं करवाय ।
> अबही शाप दे हौं मैं तुमकों, तुरतै यहां भस्म होइ जाय ।
> तासे मानो कही हमारी, दिल्ली लौटि जाव महाराज ।
> तुमहिं मुनासिब यह नाहीं थी, कीन्हीं दगा हमारे साथ ।
> सत्य विधाता हमको दीन्हों, होइ हौं सती कंत के साथ ।
> पांच महीना तेरह दिन में, नदिया बहै रक्त की धार ।
> नगर महोबा ते दिल्ली लौं, होइ है सबै सुहागिन रांड ।
> अब तुम देखो ना सिरसातन, अबही कूँच जाऊ करवाय ।।1।

।1। बड़ा आल्हखण्ड : पं. सीताराम जी, पृ. 453,454.

पृथ्वीराज चौहान गजमोतिन के मुख की कान्ति व सतीत्व भाव को देखकर भयभीत हो जाते हैं और दिल्ली की ओर सेना सहित वापसी कर देते हैं ।

माता ब्रह्मा अपने पुत्र के वियोग में शरीर त्याग देती है । रानी गजमोतिन उचित समय में अपने पति की अन्तिम क्रिया करने की तैयारी करती है । चन्दन की लकड़ी से चिता तैयार करवाई जाती है । शाही खजाने से ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा प्रदान किया जाता है । रानी सभी श्रृंगार करके सती होने के लिए तैयार होती है । मंत्री आदि सती न होने का निवेदन करते हैं परन्तु गजमोतिन तो अपने प्रियतम के गले लगकर ही स्वर्ग जाना चाहती थी । अस्तु, वह आल्हा-ऊदल का नाम लेकर मलखान के साथ चिता पर सवार हो जाती है । देखते ही देखते वह अग्नि-देवता की गोदी में समाहित हो जाती है । मलखान का पुत्र बहोरन अन्तिम क्रियाएँ करता है । इस प्रकार महान पराक्रमी वीर मलखान अपनी यश-लीला दिखाकर मातृभूमि की गोदी में हमेशा-हमेशा के लिए सो जाता है ।

कहा जाता है कि समय की गति निराली होती है । राजा परमाल महोबा में विद्यमान थे । कन्नौज भी संदेश भेजा जा सकता था, जहाँ आल्हा-ऊदल जीवन यापन कर रहे थे । परन्तु समय की गति के आगे कोई भी समाधान न हो सका । अतएव मृत्यु ही जीवन का अन्तिम सत्य माना गया है । सिरसागढ़ का किला ध्वस्त न होते हुए भी ध्वस्त हो गया ।

<u>कीरत सागर पर भुजरियों का संग्राम :-</u>

कीरत सरोवर या कीरत सागर महोबा का एक ऐतिहासिक तालाब है । ऐसा माना जाता है, कि इसे परमाल-वंशी कीर्तिवर्मन बनवाया था । यह तालाब उनकी वास्तुकला का प्रतीक है । एक दूसरा तालाब मदनताल है । यह भी अपनी ऐतिहासिकता का अनोखा स्वप्न संजोए हमारा निदर्शन करता है ।॥1॥ मदनताल भी परमाल-वंशी मदनवर्मन द्वारा बनवाया गया माना जाता है ।

सावन का महीना और उसी में सम्पन्न रक्षा-बन्धन का त्योहार सम्पूर्ण भारत वर्ष में मनाया जाता है । सावन मास की हरियाली और प्राकृतिक सुषमा को अनेक कवियों ने अपनी साहित्यिक पृष्ठभूमि प्रदान की है । अनेक प्राकृतिक वर्णनाओं में

- -

॥1॥ प्रत्यक्ष दर्शन ॥पर्यटन के माध्यम से॥ ।

सावन मास की हरितिमा पूर्ण सुषमा का चित्रण आता है ।

उत्तर भारत {बुन्देलखण्ड क्षेत्र} में यह सावन का महीना जौहर एवं युद्धों का महिना माना जाता है । इसका कारण यह भी है कि इस समय कृषि कार्य का कोई भार नहीं रहता था, प्राकृतिक वातावरण अनुकूल होता था । कारण कुछ भी हो, अधिकांश युद्ध {आदिकालीन} इसी माह में हुए हैं । सावन या रक्षा-बन्धन का पर्व भाई-बहिन के मधुर एवं पवित्र स्नेह का प्रतीक तो है ही, साथ ही साथ बालाओं एवं युवतियों के लिए यह विशेष आनन्द का प्रतीक भी है । हर युवती अपने पिता-माता के घर यह त्योहार मनाना चाहती है । इसे विभिन्न नामों से पुकारा जाता है जैसे सावन शनीना, रक्षाबन्धन, राखी आदि । उत्तर भारत में इस पर्व पर घरों में गेहूँ के दाने बोए जाते हैं । जिन्हें भुजरियाँ या कजरियाँ{1} कहते हैं । सावन माह की पूर्णिमा के दिन इन भुजरियों को मातायें-बहनें नदी या तालाब में बड़े गर्व व शान-शौकत के साथ विसर्जित करती हैं ।

राजा परमर्दिदेव की पुत्री चन्द्रावलि, जो कि बौरीगढ़ के राजा वीरशाह की पुत्रवधू थी, राखी का त्योहार मनाने अपने पिता के घर महोबा आई हुई थी । आल्हा-उदल को माहिल की चुगली के कारण महोबा से निकाल दिया गया था और वह कन्नौज-नरेश राजा जयचंद के यहाँ शरण पा चुके थे । ऐसे सुअवसर को देखकर उरई के राजा महीपति {माहिल} के दिल में ईर्ष्या का भाव जागृत हुआ । वह तो महोबा को परमाल के अधिकार में देखना ही नहीं चाहता था क्योंकि महोबा तो स्वयं महीपत-सिंह की जागीर थी, जिसे परमर्दिदेव ने अपने पराक्रम से अपने अधीन कर माहिल को निकाल दिया था । अस्तु, यह ईर्ष्या का काँटा प्रतिक्षण माहिल को कष्ट देता रहता था। अतएव माहिल दिल्ली पति पृथ्वीराज के दरबार में हाजिर होते हैं तथा महोबा का सारा वृतान्त सुनाते हैं । चूंकि पृथ्वीराज चौहान स्वयं भी राजा परमाल से पराजित हो चुके थे, तथा अपनी पुत्री बेला का विवाह भी मजबूरी में परमाल के राजकुमार ब्रह्मानंद के साथ करना पड़ा था । अतः वह भी हमेशा अपने अपमान का बदला लेने का मौका देखा करते थे । यह उन्हें अच्छा अवसर प्राप्त हुआ, कि महोबा आल्हा-उदल जैसे वीरवरों से हीन था और वीर मलखान को वह पहले ही धोखे से

{1} गेहूँ या जौ के पौधें, जो राखी के त्यौहार के आठ दिन पूर्व बोए जाते हैं, तथा रक्षा-बन्धन के दिन विसर्जित किए जाते हैं ।

समाप्त कर चुके थे । माहिल की चिकनी-चुपड़ी बातों ने उन्हें और अधिक प्रभावित किया । अतः पृथ्वीराज चौहान अपनी सातलाख की पलटन लेकर अपने पुत्रों, महान योद्धाओं एवं चौड़ियाराय जैसे पराक्रमी योद्धाओं के साथ महोबा की ओर प्रस्थान कर देते हैं । यह सावन का महिना था ।

मार्ग का समय समाप्त करती हुई पृथ्वीराज चौहान की सेना महोबा पहुँचती है और पूरे महोबा नगर की घेराबंदी कर देती हैं । राजा परमाल का एक चन्दन का बगीचा था । वहां वह स्वयं डेरा डाल देता है । यथा :-

सात रोज की मंजिल करके, महुबा धुरा दबायो जाए ।
चन्दन बगिया में पिरथी ने, अपने तम्बू दिए लगाय ।
कोऊ परिगयो मदनताल पर, कोऊ बैरागी ताल पर जाए ।
खजुआगढ़ में कोऊ परि गयो, कोऊ लोहर गांध मैदान ।
बारह कोसी चौगिर्दी में, झंडन रही लालरी छाय ।1।

रानी मल्हना (राजा परमाल की पटरानी) को जब यह मालूम होता है कि दिल्ली-नरेश ने महोबा नगर की घेराबन्दी करदी है, तो वह अत्यन्त चिंतित हो जाती है । उधर पृथ्वीराज ने अपना मांग पत्र भेजा, जिसमें चन्द्रावलि की डोली के साथ अश्व एवं नौलखाहार आदि सामिल था । परमाल वंश के लिए यह कुल मर्यादा का प्रश्न था । अब उसे आल्हा-ऊदल की याद आती है क्योंकि उनके बिना पृथ्वीराज से टक्कर लेने का साहस किसका हो सकता था ।

वह पृथ्वीराज से कुछ दिनों की मोहलत (Permission) मांगती है । तत्पश्चात रात्रि में मनिया देव के मंदिर में जाकर उनका जाती है, पूजा-अर्चना करती है । अब देवी प्रसन्न होती है, तो अपना निवेदन करती है । देवी रानी को आश्वासन देती है, कि तुम्हारी मर्यादा नष्ट नहीं होगी । इस प्रकार रानी महलों में आ जाती है । देवी रानी की प्रार्थना के अनुसार कन्नौज जाती है । वहां सोते हुए ऊदल को स्वप्न देती है । ढेबा (परमाल घराने के पुरोहित का लड़का) को भी स्वप्न देती है कि- महोबा को पृथ्वीराज ने घेर लिया है । परमाल व मल्हना की मर्यादा संकट में है । प्रातः उठकर वह ढेबा से सलाह करते हैं । लाखन से भी सलाह

---

(1) मुजरियों की लड़ाई, कृत अमोलसिंह, पृ. 18.

करते हैं । इस प्रकार महोबा आने की योजना बनाते हैं । लाखन सिंह पहले से ही महोबा नगर देखने के इच्छुक थे और अब यह उन्हें वीरता दिखाने का अवसर भी मिल रहा था । अतः लाखन, ऊदल, देबा तथा ताल्हन सैयद गांजर क्षेत्र में शिकार खेलने का बहाना करके अपने सैन्यबल के साथ महोबा के लिए तैयारी करते हैं । आल्हा तथा उनकी माता देवल को अपने अपमान की याद आ रही थी, इसलिए वह किसी भी शर्त पर महोबा जाने को तैयार नहीं थे, न ही ऊदल को आज्ञा दे सकते थे । इसलिए ऊदल को बहाना बनाना पड़ा । उन्होंने सोनवां रानी अर्थात आल्हा की पत्नी को सारी वास्तविकता बता दी थी । एक ओर अपमान दूसरी ओर मां के दूध का ऋण । अतः मां के ऋण के वशीभूत होकर ऊदल महोबा की ओर प्रस्थान कर देते हैं । राजा जयचंद से लाखन पहले ही आज्ञा ले चुके थे ।

नदी बेतवा पार करके चारों योद्धा योगियों का रूप धारण कर लेते हैं । ऊदल, ताल्हन सैयद से आग्रह करते हैं कि सिरसागढ़ होकर महोबा चला जाए । लाखन की भी मलखान से मिलने की इच्छा थी । अतः वे सिरसागढ़ की ओर चल देते हैं । सिरसागढ़ पहुँचकर पुरवासियों द्वारा उन्हें मलखान की हत्या का सारा समाचार मिलता है । उन्हें यह भी पता चलता है कि मलखान की हत्या पृथ्वीराज ने कपट-नीति से की है । माता ब्रह्मा की मृत्यु तथा गजमोतिन-सती का भी समाचार मिलता है । ऊदल व्याकुल होकर विलाप करने लगते हैं । सिरसा का किला वीरान हो गया था । उस पर कौए मंडरा रहे थे । अब चारों वीर गजमोतिन-सती स्थल पर जाते हैं । ऊदल अत्यन्त विलाप करने लगते हैं । उसी समय गजमोतिन की आत्मा उन्हें ढाढ़स बंधाती है । पहले ऊदल महोबा नहीं जाना चाहते हैं, क्योंकि उन्हें यह दुख था, कि राजा परमाल समीप थे, फिर भी उन्होंने मदद नहीं की । परन्तु गजमोतिन की क्रुद्ध आत्मा उन्हें महोबा जाने के लिए विवश कर देती है । यथा :-

बोली आत्मा गजमोतिन की, देवर सुनो उदयसिंह राय ।
जल्दी जाओ तुम महुबे को, यहाँ क्यों खाक बटोरो आप ।
पृथीराज लूटि हैं महुबे को, तुम्हरे जीवे को धिक्कार ।
चन्द्रावलि बेटी जो हइ पै है, तो जग होइ हैं हंसी तुम्हार ।
ताते जल्द जाउ महुबे को, उनकी पचनी देव कराय ।
जो तुम महुबे को पै हो ना, देहों शाप भस्म होइ जाय ।§1§

---

§1§ बड़ा आल्हखण्ड : पं.महावीर प्रसाद, पृ. 461.

चारों वीर क्रुद्ध होकर महोबा की ओर प्रस्थान करते हैं। वहां पहुँचकर जोगियों की सेना पड़ाव डाल देती है। ऊदल, लाखन, सैयद एवं देबा महोबा फाटक पर पहुँचकर भिक्षा का बहाना कर नगर में प्रवेश करते हैं। वहां देखते हैं कि महोबा की जनता पृथ्वीराज के आतंक से त्राहि-त्राहि कर रही थी। जोगी अपने करिश्मे दिखाते हुए पनघट पर पहुँच जाते हैं। बाँदी या सेविका द्वारा जब महलों में सूचना पहुँचती है तो रानी मल्हना उन्हें महलों में आमंत्रित करती है। पहले तो उनके व्यक्तित्व देखकर वह शंकाग्रस्त हो जाती है। वह सोचती है कि यह जोगी वेष में पृथ्वीराज के लड़के भी हो सकते हैं। परन्तु प्रश्नोत्तर के माध्यम से उसकी शंका का समाधान हो जाता है। रानी की चिन्ता का कारण जब योगी पूँछते हैं तो वह आल्हा-ऊदल के पौरुष का वर्णन करती हुई विलाप करने लगती है। लाखन ऊदल को इशारा करते है कि वह ऊदल रूप को प्रकट करदें। परन्तु ऊदल तो हठीले स्वाभाव के थे। चन्द्रावलि जब योगियों को देखती है, तो वह भी ऊदल और मलखान का पौरुष बखान कर रोने लगती है। योगी वेशधारी ऊदल के प्रति उसे शंका भी होती है परन्तु रानी उसकी शंका निर्मूल कर देती है। वह कहती है कि- बेटी, ऊदल क्यों जोगी बनेंगे ? क्या उनकी तलवार की धार समाप्त हो गई हैं ?

लाखन नगर की शोभा एवं वैभव को देखकर आश्चर्य कर रहे थे। घर-घर में लक्ष्मी का प्रकाश था। पारस पाथर की महिमा थी। रानी के विलाप से प्रभावित होकर जोगी उसे आश्वासन देते हैं कि वे उनकी मर्यादा की रक्षा करेंगे। रानी इस कार्य के लिए {युद्ध} उन्हें अयोग्य समझती थी। उसकी मति के अनुसार क्षत्री ही पृथ्वीराज के लश्कर का सामना करता है। परन्तु योगी गंगा की शपथ खाकर महोबा की रक्षा का वचन देते है और अपने तम्बुओं में वापस लौट आते हैं।

माहिल यह सब देख रहे थे। वह तुरन्त सारी सूचना पृथ्वीराज को देते हैं। पृथ्वीराज चौड़ियाराय से अनुरोध करता है कि पहले वह जोगियों को नगर की सीमा से बाहर भगा दें। चौड़ा अपनी सेना लेकर जोगियों के लश्कर की ओर जाता है। बातचीत करता हैं। परन्तु जोगियों के तेज और उनकी विशाल सेना को देखकर वह भयभीत होकर वापस लौट आता है। वह पृथ्वीराज से कहता है कि- महाराज, यह सिद्ध योगी हैं। उनसे झगड़ा करने में कोई लाभ नहीं हैं। हमें तो अपने उद्देश्य को पूरा करना है। महोबा की लूट कर ली जाए तथा चन्द्रावलि की डोली लेकर दिल्ली की ओर प्रस्थान किया जाए।

उधर राखी का दिन आ पहुँचा । मल्हना चन्द्रावलि को बार-बार समझा रही थी कि वह भुजरियों का विसर्जन महलों में ही करदे । परन्तु वह हठ कर रही थी । उसे बार-बार आल्हा-ऊदल की याद सता रही थी । जब बेटी किसी प्रकार तैयार नहीं हुई, तो रानी अपने ज्येष्ठ पुत्र ब्रह्मानंद के पास जाकर बहन की भुजरियां विसर्जन का प्रस्ताव करती है । ब्रह्मानन्द मना कर देता है । वह व्यर्थ में पृथ्वीराज से युद्ध करके खून-खराबा नहीं करना चाहता था । शपथ या आश्वासन के अनुसार योगी भी नहीं आए थे । इन्हीं कारणों से मल्हना और भी व्याकुल हो रही थी ।

रानी की यह दशा देखकर अभई या अभयसिंह बहुत दुखी हो जाता है । यह माहिल का पुत्र था । वह अपनी बहिन चन्द्रावलि की पवनी कराने हेतु तैयार हो जाता है । माहिल मना करता है फिरभी वह अपने पिता की बात नहीं मानता है । वह कहता है कि- हमेशा मनुष्य को न्याय का साथ देना चाहिए । वह राजा परमाल के छोटे पुत्र रंजितसिंह को साथ में लेकर भुजरियाँ-विसर्जन हेतु सेना की तैयारी शुरु कर देता है । उधर रानी मल्हना समस्त रानियों तथा चन्द्रावलि की सहेलियों की डोली तैयार करवा देती हैं । हरे रंग की डोलियां, हरे रंग की कपड़ें व हरे रंग की कजरियाँ एक अनोखा दृश्य उपस्थित कर रही थी । रानी मल्हना ने सभी सहेलियों को कटार दे रखी थी । उसने उन्हें समझाया कि यदि अभई व रंजित वीर-गति को प्राप्त हो जाए, तो तुम इस कटार से आत्मरक्षा करना और अन्त में प्राणों का बलिदान कर देना/परन्तु जीते जी डोली दिल्ली नहीं जानी चाहिए । इसप्रकार हिदायतें देकर रानी मल्हना अभई और रंजित के नेतृत्व में पवनी करने के लिए कीरत सागर की ओर प्रस्थान करती है । महोबा की सेना चन्द्रावलि की डोली की विशेष सुरक्षा कर रही थी ।

अभयसिंह, रंजित और चौंडा की लड़ाई :-

माहिल-पुत्र अभयसिंह तथा चन्देल-कुमार रंजित के नेतृत्व में महोबा वालाओं की डोलियां भुजरियों के विसर्जन हेतु कीरत सागर की ओर प्रस्थान करती हैं । नगर के मुख्य द्वारा से बाहर निकलने के बाद पृथ्वीराज की विशाल सेना का पड़ाव था । सम्पूर्ण सेना इसी अवसर की प्रतीक्षा कर रही थी, कि किसी भी प्रकार से राजकुमारी चन्द्रावलि की डोली छीन ली जाए । अस्तु पृथ्वीराज चौंड़ियाराय को रंजित की

वही : पृ. 470.

सेना पर आक्रमण करने का आदेश देता है ।

चौड़ियाराय महोबा-सेना पर आक्रमण कर देता है । जब वह अभई को सामने देखता है, तो चन्द्रावलि की डोली हेतु प्रस्ताव करता है । अभई और रंजित दोनों उसका मुँहतोड़ जवाब देते हैं । दोनों सेनाओं में भीषण युद्ध प्रारम्भ हो जाता है । महोबा सेना के समक्ष चौड़िया राय की सेना के पैर उखड़ जाते हैं । वह भयभीत होकर, अपने प्राण बचाकर मोर्चा फेर देता है । डोलियाँ आगे बढ़ जाती हैं ।

पृथ्वीराज को जब यह पता चलता है कि चौड़ा ने अभई व रंजित के सामने से मोर्चा हटा लिया है तो वह अपने पुत्र सूरजमल को युद्ध हेतु आज्ञा देता है । सूरजमल तथा टंकराज जैसे महान योद्धा महोबा-सेना के सामने उपस्थित होते हैं । दोनों सेनाओं में भयंकर युद्ध होता है । भूखे सिंह की तरह सिपाही एक-दूसरे पर टूट पड़ते हैं । अभयसिंह तथा रंजित अपने अनोखे रण-कौशल का परिचय दे रहे थे, क्योंकि यह चन्देल वंश की मर्यादा का प्रश्न था । माहिल बार-बार अपने पुत्र को धिक्कार रहा था । परन्तु वह तो न्याय का साथ देकर बलिदान हो जाना चाहता था । उधर सूरजमल तथा टंकराज भी अपनी आन के लिए जी-जान से युद्ध कर रहे थे । दोनों वीर रंजित और अभई के प्रहारों को कभी नाकाम कर देते थे, तो कभी घायल हो जाते थे । अन्त में सूरजमल तथा टंकराज दोनों ही महोबा के वीरों की तलवार के भेंट हो जाते हैं ।

अपने पुत्र की हत्या का समाचार सुनकर दिल्ली-नरेश चौहान अत्यन्त चिंता-ग्रस्त हो जाते हैं तथा माहिल को धिक्कारने लगते हैं । अन्त में वे अपने महावीर ज्येष्ठ पुत्र ताहरसिंह को याद करते हैं । ताहर के साथ सरदनि-मरदनि भी युद्ध के लिए तैयार होते हैं । युद्ध-स्थल में पहुँचकर वे सर्वप्रथम अपने भाइयों के शव को डोली में रखकर लश्कर में भेज देते हैं । तत्पश्चात अभयसिंह व रंजित को युद्ध के लिए ललकारते हैं ।

अभई व रंजित बड़े साहस के साथ ताहर का सामना करते हैं । ताहर ओजस्वी स्वर में अभई से कहता है कि—

आगे बढ़ि गए ताहर ठाकुर, औ रंजित ते लगे बतान ।
डोला धरि देउ चन्द्रावलि को, जो जीते सो लेय उठाय ।[1]

---

[1] वही : पृ.सं. 472.

चन्द्रावलि सहित सभी महोबा-बालाओं की डोलियां रणखेत में रख दी जाती हैं और प्रारम्भ हो जाती है तलवारों तथा तेगों की झनझनाहट तथा खटखटाहट । दोनों ओर के हजारों सैनिक वीरगति को प्राप्त हो जाते हैं । डोलियों तथा मुजरियों की हरियाली लालिमा में परिवर्तित हो जाती है । वीरवर अपने-अपने आराध्य देवों का स्मरण करके अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार कर रहे थे । अन्त में ताहरसिंह के प्रहारों से अभई व रंजित दोनों मातृभूमि की गोदी में चिर निंद्रा के लिए सो जाते हैं । उनके सिर धड़ से अलग कर दिए जाते हैं ।

रानी मल्हना युद्ध के ऐसे भीषण दृश्य को देखकर व्याकुल हो जाती है और अपनी पुत्री को धिक्कारने लगती है, यथा---

मल्हना रोय उठी दुरसे तब, औ बेटी से कही सुनाय ।
बात हमारी तुम मानी ना, औ सागर पर आई लिवाय ।
दोनों लरिका खेत जुझिगे, अब को रखि है धर्म हमार ।{1}

माता की व्याकुलता देखकर अभई और रंजित की आभा उन्हें धैर्य बंधाती हुई कहती है, कि---

बोली आभा तब दोनों की, ब्रह्मैं खबरि देउ पहुँचाय ।
जौलौं ब्रह्मा दियें ऐहैना, तौलौं रुंड करें तलवार ।
जगे रुंड अभई रंजित के, रण में कठिन करे तलवारि ।
मुर्चा फेरि दियो ताहर को, क्षत्री लै लै भगे पिरान ।{2}

इस प्रकार संदेश-वाहक द्वारा ब्रह्मानन्द के पास युद्ध का समाचार प्रेषित किया जाता है । उन्हें यह भी संदेश भेजा जाता है, कि अभई व रंजित अपनी तलवार का परिचय देते हुए वीरगति को प्राप्त हो गए हैं और माता मल्हना ने तुम्हें याद किया है ।

<u>ब्रह्मानन्द का संग्राम :-</u>

युद्ध का समाचार सुनकर परमाल-पुत्र ब्रह्मानंद को विवश होकर युद्ध के लिए तैयार होना पड़ता है क्योंकि अब चन्देलवंश की मर्यादा के आगे प्रश्न चिह्न लगने जा रहा था । ब्रह्मानंद विशाल सेना लेकर कीरत सरोवर की ओर प्रस्थान करता है ।

{1} मुजरियों की लड़ाई, अमोलसिंह, पृ. 32.
{2} वही : पृ. 40.

अभई एवं रंजित के संग पिथौरा की सेना का मुहरा मार रहे थे । ब्रह्मा के पहुँचने पर दोनों के सिर माता मल्हना की गोदी में शरण लेते हैं । वह उन्हें पालकी में सम्मान सहित महोबा भेज देती है ।

अब ब्रह्मानंद क्रोधित होकर पूर्ण शक्ति के साथ पृथ्वीराज की सेना का सामना करता है । वह जानता था कि इतनी बड़ी सेना का सामना करना साधारण बात नहीं है । अतः जान हथेली पर रखकर तथा इष्ट देवता का स्मरण करके शत्रु की सेना पर टूट पड़ता है । सर्वप्रथम ताहर का सामना होता है । ब्रह्मानंद की तीखी मार के सामने ताहर की सेना के पैर उखड़ जाते हैं और ताहर को अपना मोर्चा हटाना पड़ता है । युद्ध का ऐसा दृश्य देखकर माहिल, स्वयं पृथ्वीराज को ब्रह्मा का सामना करने के लिए प्रेरित करता है ।

महीपति सिंह की बात मानकर स्वयं पृथ्वीराज आदि भयंकर नामक हाथी पर सवार होकर चौड़ियाराय, धांधू[1] आदि के साथ कीरत सागर पर उपस्थित होते हैं । जब वह ब्रह्मानंद की युद्ध-कला और साहस को देखते हैं, तो मन ही मन प्रशंसा करते हैं । यथा :-

सोचे पृथ्वीराज अपने मन, धनि-धनि ब्रह्मा राजकुमार ।
बड़े-बड़े शूर रहत महुबे में, एक ते एक वीर सरदार ।[2]

पृथ्वीराज ब्रह्मानंद के अद्भुत पराक्रम को देखकर शंका-ग्रस्त हो जाते हैं । उधर ब्रह्मा भी दिल्ली के विशाल लश्कर को देखकर और अधिक जोश से युद्ध कर रहा था । पृथ्वी के कहने पर चौड़ियाराय, धीरसिंह, धांधू, ताहरसिंह व सरदनि-मरदनि एक साथ ब्रह्मा पर टूट पड़ते हैं । ब्रह्मा की भीषण मार के सामने दुश्मन की सेना टिक नहीं पा रही थी । चौड़ा और धांधू चन्देलपुत्र के प्रहारों से युद्ध-स्थल में हाथी से नीचे गिर कर मूर्छित हो जाते हैं । परन्तु ब्राह्मण-पुत्र होने के नाते ब्रह्मा उनकी हत्या नहीं करता है । वह दोनों लज्जित होकर अपना मोर्चा हटा लेते हैं । सरदनि, मरदनि जो कि पृथ्वीराज के पुत्र थे, वे ब्रह्मानंद की तलवार के भेंट हो जाते हैं । ताहरसिंह की तलवार भी चन्देल-पुत्र के समक्ष तेजहीन हो जाती है । अब धीरसिंह सामने आता है क्योंकि वह भी वरदानी था । इधर चन्देल कुमार को भी देवी का वर प्राप्त था ।

---

[1] धांधू : चौहान घराने का ब्राह्मण-पुत्र ।
[2] महा कवि जगनिक कृत, लोकगाथा काव्य आल्हा, लोकनाथ द्विवेदीजी, पृ. 775.

यथा :-

> आवत देखो धीरसिंह को, तब ब्रह्मा मन कियो विचार ।
> आज अखाड़े में *बरनी* है, आवत धीरसिंह सरदार ।
> बड़ो भक्त है यह देवी को, भारी शूर जगत सरनाम ।§1§

धीरसिंह, ब्रह्मा के समक्ष आकर चन्द्रावलि की डोली के लिए प्रस्ताव रखता है । ब्रह्मा क्रोधित होकर उसका मुँहतोड़ जवाब देते हैं । दोनों एक दूसरे पर करारे प्रहार करते हैं । दोनों वरदानी थे, अतः एक दूसरे के प्रहारों को नाकाम कर देते थे । धीरसिंह के अस्त्रों का प्रहार नाकाम करते हुए ब्रह्मा कहते हैं—

> बोले ब्रह्मा धीरसिंह से, हमहूँ भक्त अम्बिका क्यार ।
> जितने शस्त्र होय तुम्हरे संग, सो हम पर सब देउ चलाय ।
> यह सुनि सोचे धीरसिंह तब, है यह बड़ा शूर सरदार ।
> चोटें हमरी खाली परि गईं, ब्राह्मण भक्त धन्य संसार ।§2§

अन्त में धीरजसिंह भी ब्रह्मानंद के सामने से अपना मोर्चा हटा लेते हैं । युद्ध का ऐसा दृश्य एवं ब्रह्मा की अनुपम वीरता देखकर पृथ्वीराज लज्जित हो जाते हैं और स्वयं ब्रह्मा पर आक्रमण कर देते हैं क्योंकि उनके सारे योद्धा चन्देल-पुत्र के सामने से अपने मुँह की खाकर भाग रहे थे ।

उधर महोबा के मदनताल पर पड़ी जोगियों की सेना समय का इन्तज़ार कर रही थी । वह घनघोर संग्राम का समय था । लाखन ने उदल से कहा, कि समय निकलने पर महोबा की रक्षा करना संभव नहीं होगा । अकेले ब्रह्मासिंह दिल्ली की विशाल सेना का सामना कर रहे हैं । यदि चन्द्रावलि की डोली दिल्ली पहुँच गई, तो चंदेल वंश की नाक कट जाएगी । लाखन की ओजस्वी बातें सुनकर उदल, देबा आदि अपनी सेना लेकर कीरत सागर पर उपस्थित हो जाते हैं । लाखन जब देखता है, कि दो सौ हाथियों के झुंड में फंसा हुआ चन्देल-पुत्र दोनों हाथों से तलवार कर रहा है,तो वे मन ही मन प्रशंसा करते हैं ।

जोगियों की विशाल सेना देखकर पृथ्वीराज पुनः आश्चर्य चकित हो जाते हैं । योगी वेशधारी उदल, लाखन, देबा तथा ताल्हन सैयद एक साथ पृथ्वीराज की सेना पर

---

§1§ आल्हखण्ड : पं. भोलानाथ, 1921, पृ. 477.
§2§ वही : " पृ. 502.

धावा बोल देते हैं । उनके भीषण प्रहारों से दिल्ली सेना में खलबली मच जाती है । चौहान की सेना के बड़े योद्धा अपना मोर्चा हटा लेते हैं और कहते हैं, कि- योगी बड़ी बुरी बला हैं । इधर पृथ्वीराज चौहान स्वयं ब्रह्मानंद का सामना करने उपस्थित होता है । दिल्ली-नरेश को अपने सामने देखकर ब्रह्मानंद पहले से और अधिक क्रोधित होकर युद्ध करने के लिए तत्पर हो जाता है । वह उनसे यह भी कहता है कि आप मेरे पिता-तुल्य हैं । यह आपने अनुचित कार्य किया कि महोबा खाली समझकर चढ़ाई कर दी ।

ऐसा माना जाता है कि चन्दबरदाई, पृथ्वीराज चौहान के साथ युद्ध स्थल में जाया करता था । इस युद्ध में भी वह दिल्ली-नरेश के साथ था । जब उसने देखा कि ब्रह्मानंद के सामने स्वयं महाराज नहीं टिक पा रहे हैं तो वह पिरथी से लाल कमान का प्रयोग करने के लिए कहता है । जब पृथ्वीराज लाल कमान लेकर शब्दबेधी बाण का प्रयोग करना चाहते हैं, तो देवी का वरदानी ब्रह्मानंद भी प्राणों का मोह त्याग कर दैवीय बाण मोहन का प्रयोग करता है । बाण के प्रहार से पृथ्वीराज चौहान अपने हाथी के हौदा में मूर्छित हो जाते हैं ।

उधर चौड़ियाराय ने रानी मल्हना की डोली घेर ली थी तथा ताहर चन्द्रावलि की डोली लेकर दिल्ली की ओर प्रस्थान करने वाला था । उसी समय लाखन और ऊदल युद्ध करते-करते वहीं पहुँच जाते हैं । माता मल्हना का विलाप देखकर ऊदल चौड़ा का तथा लाखन ताहर का मोहरा मारते हैं । रानी मल्हना जब योगियों को अपनी सहायतार्थ देखती है, तो वह उन्हें देवदूत समझती हैं । क्योंकि यदि यह सहायता के लिए न आते, तो चौड़ियाराय रानी मल्हना का नौलखाहार आदि आभूषणों की लूट करवा लेता तथा ताहर चन्द्रावलि की डोली का हरण कर लेता । रानी मल्हना सभी योगी वेशधारी वीरों का धन्यवाद ज्ञापित करती है । परन्तु ऊदल कहते हैं कि मैंने तो यह शपथ का निर्वाह किया है ।

अब ऊदल चन्द्रावलि से सरोवर में भुजरियाँ विसर्जन के लिए कहता है । वह अपनी सभी सहेलियों के साथ मल्हार गीत गाती हुई सरोवर में भुजरियों के दोना विसर्जित करती है । पृथ्वीराज चौहान पुनः ताहर और चौड़ा को आदेश देते हैं कि कम से कम शकुन का दोना ही लाओ । ताहर और चौड़ा किरत सागर पर आते हैं और दोना लेने का प्रयास करते हैं । लाखन उन्हें चुनौती देते हैं कि यदि एक भी दोना

तुम पा सको, तो मैं बहन चन्द्रावलि की डोली पर हार मान लूँ । ऊदल कहता है कि यदि एक भी भुजरियों का दोना पृथ्वीराज के हाथ लग गया, तो बहिन की पवनी खोटी हो जाएगी और चन्देल वंश की मर्यादा कलंकित हो जाएगी । इस प्रकार ऊदल और लाखन की वीरता के सामने ताहर और चौड़ा को अपने मुँह की खानी पड़ती है ।

राजकुमारी चन्द्रवलि भुजरियों के विसर्जन के उपरान्त भुजरियां देना चाहती है । वह रानी मल्हना के पास आकर ऊदल का नाम लेकर रोने लगती है । क्योंकि उत्तर भारत में ऐसी प्रथा है कि रक्षा-बन्धन के त्योहार में बहिन सबसे पहले अपने भाई को ही भुजरियाँ देती हैं और राखी बाँधती है । अस्तु,ऐसे अवसर पर ऊदल की याद आना स्वाभाविक ही था । मल्हना अपनी बेटी को धैर्य बंधाती हुई कहती है कि- बेटी जिन योगियों हमारी लाज बचाई है वे किसी भाई से कम नहीं हैं । अतः तुम इन्हें ही अपना भाई समझकर कजरियाँ प्रदान करो और राखी बाँधो । चन्द्रावलि ऐसा ही करती है । वह सबसे पहले ऊदल को भुजरियाँ देना चाहती है परन्तु वह लाखन की ओर इशारा करते हैं । वे कहते हैं कि यह बड़ा जोगी है । सबसे पहले इसे ही भुजरियाँ दो ।

ऊदल की बात सुनकर लाखनसिंह प्रेम से गद-गद हो जाते हैं । चन्द्रावलि लाखन को कजरियाँ देती है और राखी बाँधती है । लाखन लज्जित हो जाते हैं,क्योंकि उपहार में देने के लिए उस समय उनके पास धन-दौलत आदि कुछ तो था नहीं । अतः वे हाथ में पहनी हुई हीरों की अंगूठी तथा पचास हाथी चन्द्रावलि को दान में देते हैं । जब वह ऊदल के राखी बाँधती है, तो ऊदल अपनी भुजा का कंगन प्रदान करते हैं । कंगन देखकर राजकुमारी पहचान जाती है कि यह ऊदल भैया हैं । वह कंगन अपनी माता को दिखाती है, और कहती है कि- यह ऊदल का कंगन है । योगी के पास कैसे आया । निश्चय ही बनावटी वेशधारी ऊदल है । वास्तविकता तो छिपती है ही नहीं, फिर माता मल्हना ने अपने स्तन का पान कराके ऊदल को सुदृढ़ बनाया था । अतः सारा भेद खुल जाता है । तब तक ब्रह्मा भी वहाँ पहुँच जाते हैं । चन्द्रावलि कहती है कि--

बिना बेंदुला के चढ़ैया को पिरथी को देइ हटाय - ॥1॥

राजकुमारी चन्द्रावलि ऊदल, लाखन तथा ब्रह्मा का नाम लेकर हिंडोला झूलती हैं ।

॥1॥ आल्हखंड : खेमराज, श्रीकृष्ण प्रकाशन,कानपुर, पृ. 570.

मल्हार गाती है तथा सभी सहेलियों के साथ खुशियां मनाती है । उधर जब पृथ्वीराज को मालूम होता है कि जोगी के वेश में ऊदल तथा लाखन आए थे, तो उनकी शंका वास्तविकता में बदल जाती है । उन्हें विश्वास था कि आदिभयंकर हाथी की टक्कर घोड़ा बेंदुला ही ले सकता है या कुजरासिन भूरी हथनी । कुजरासिन भूरी हथिनी रतीभान-पुत्र लाखन की सवारी थी । अपना-सा मुँह लेकर पृथ्वीराज डेढ़ लाख सैनिकों को रणचण्डी की भेंट देकर दिल्ली के लिए वापस प्रस्थान कर देते हैं । राजा टंकराज, सूरजमल, सरदनि और मरदनि नाम के पृथ्वीराज के पुत्र भी शहीद हो जाते हैं ।

रानी मल्हना की खुशी का ठिकाना नहीं रहता है । वह धावन के द्वारा दरबार में ऊदल के आने की सूचना भेजती है तथा विजय का संदेश भी भेजती है । सूचना पाकर राजा परमाल अत्यन्त प्रसन्न हो जाते हैं तथा हाथी पर सवार होकर स्वयं कीरत सरोवर पर आ जाते हैं । ऊदल और लाखन उन्हें प्रणाम करते हैं । परमाल और मल्हना लाखन तथा ऊदल के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं तथा महोबा वापस चलने तथा राजकाज चलाने का आग्रह करते हैं । ऊदल उनके आग्रह को अस्वीकार कर देते हैं, क्योंकि उन्हें अपने पूर्व अपमान की याद आ जाती है । इसके अतिरिक्त वह आल्हा तथा माता देवल को गांजर शिकार खेलने का बहाना करके महोबा की रक्षा करने आए थे । परमाल द्वारा महोबा चलने के प्रस्ताव के उत्तर में ऊदल जवाब देते हैं —

हाथ जोरि बोले ऊदल तब, दादा सुनि लेउ बात हमारि ।
भादों चिरैया ना घर छांड़े, ना बनिजारा बनिज को जाए ।
तब तुम सोची क्या अपने मन, जो भादों में दियो निकारि ।
बात मानिके तुम माहिल की, हम पर रूठि कियो अपमान ।
तीनि तलाकें दियो हमकों तुम, हमरे गई करेजे सालि ।
जियत महोबे हम जैहैं ना, कागा भरे हाड़ लै जाए ।[1]

जब रानी मल्हना तथा परमाल अपनी भूल स्वीकार करते हैं तथा रानी मल्हना अपने मातृधर्म के निर्वाह का स्मरण दिलाती है । वह यह भी कहती है कि जब तुम वापस चले जाओगे, तो महोबा ऊदल-विहीन समझकर पृथ्वीराज पुनः चढ़ाई कर देगा । इस पर ऊदल पुनः उत्तर देते हैं—

धीरज राखो अपने मन में, हमरे बचन करो परमान ।

---

[1] बृहद आल्हखंड : खेमराज प्रकाशन, बम्बई, पृ. 488.

छिपिके आये हम आल्हा ते, हमनें करो बहाना जाए ।
संग जात हैं हम लाखनि के, गांजर केन हेत शिकार ।
ऐसे छिपिके हम आये हैं, तातों हम रहिबे के नाहिं ।
लखकर जावें पृथ्वीराज जब, तुरते दीजो खबरि कराय ।
मुहरा मारों मैं पिरथी को, मा को दूध निबाहों आए ।§1§

इस प्रकार मल्हना, परमार, ब्रह्मा विवश हो जाते हैं । रानी लाखनि के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करती है । वह कहती है कि- लाखन तुम धन्य हो । तुमने मेरी मर्यादा रखली तथा बिछुरे हुए ऊदल को मिला दिया । अन्त में कन्नौज की सेना राजा परमाल तथा मल्हनदे से आज्ञा लेकर वापस प्रस्थान कर देती है । डेढ़ लाखन फौज दिल्ली की तथा तीस हजार फौज महुबे की कीरत सागर के संग्राम में स्वाहा हो जाती है । माहिल-पुत्र अभई तथा परमाल पुत्र रंजित भी शहीद हो जाते हैं । इस प्रकार यह कठिन संग्राम संपन्न होता है । यह संग्राम ब्रह्मानंद की अद्भुत वीरता का परिचायक है, जिसने सूरजमल, टंकराज तथा सरदनि- मरदनि आदि पृथ्वीराज पुत्रों को मौत के घाट उतार दिया । इसके बाद आल्हा मनौआ प्रसंग है, जिसमें महाकवि जगनिक स्वयं रूठे हुए आल्हा को कन्नौज मनाने जाते हैं । यह राजा चन्देल का स्वयं का प्रस्ताव था ।

आल्हा मनौआ :-

आल्हा-मनौआ प्रसंग में जगनिक या जगनायक के विषय में विद्वानों में मतभेद है । इसका स्पष्टीकरण द्वितीय परिच्छेद में दिया जा चुका है । कुछ लोग इसे चन्देल का भांजा मानते हैं तथा कुछ लोग इसे महाकवि §दरबारी§ भाट जगनिक मानते हैं जो परमाल रासो का प्रणेता माना जाता है ।

कीरत सागर पर पराजित होने के बाद दिल्ली-नरेश पृथ्वीराज चौहान स्वयं को अत्यन्त अपमानित समझने लगे थे । जब लाखन व ऊदल कन्नौज वापस चले गए, तो माहिल ने पुनः पृथ्वीराज को महोबा पर चढ़ाई या आक्रमण करने के लिए उत्प्रेरित किया । वह तो चन्देल से बदला लेना ही चाहते थे । अतः माहिल के कहने पर वह महोबा पर आक्रमण की योजना बनाता है और विशाल सेना को लेकर महोबा की घेरा-बन्दी कर लेता है । पृथ्वीराज की विशाल सेना देखकर चन्देल की पटरानी मल्हना व्याकुल हो जाती है ।

---

§1§ वही : पृ.489.

पृथ्वीराज चौहान महीपति राय के द्वारा परमाल के पास माँग-पत्र भेजता है, जिसमें धन-दौलत, नौलखाहार, उड़न-बछेड़ा के साथ-साथ चन्द्रावलि की डोली का भी प्रस्ताव था। माहिल प्रस्ताव लेकर मल्हना के महल में जाता है। मल्हना माहिल को धिक्कारती है तथा पन्द्रह दिन का समय माँगती है। वह कहती है कि- महोबा खाली समझकर चौहान ने चढ़ाई कर दी है। मैं ऊदल को कन्नौज से बुलवा लेती हूँ, इतना समय प्रदान करें। उसने यह भी कहा कि- चौहान से कहना यह उनकी वीरता का प्रतीक नहीं है। यदि वास्तव में वे वीर थे, तो कीरत सागर से क्यों वापस चले गए। चौहान तो महोबा लूटने की योजना बना ही रहा था।

माहिल द्वारा मल्हना का निवेदन सुनकर, पृथ्वीराज ने उसे पन्द्रह दिन का समय प्रदान कर दिया और कहा कि- यह पन्द्रह दिन में हमारा प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया गया, तो सोलहवे दिन महोबा पर आक्रमण कर दिया जाएगा।

अब मल्हना के पास आल्हा-ऊदल को समाचार भेज कर महोबा बुलाने का प्रश्न था। वह रात्रि में पालकी पर सवार होकर जगनेरी जाती है तथा जगनिक को कन्नौज समाचार भेजने के लिए प्रस्तावित करती है। पहले तो वह इंकार करता है क्योंकि उसे मालूम था कि आल्हा आसानी से महोबा आने वाले नहीं है, परन्तु रानी के आग्रह से तथा विपत्ति-वर्णन सुनकर वह कन्नौज जाने के लिए तैयार हो जाता है। जगनिक के प्रस्ताव के अनुसार रानी उसे ब्रह्मानंद का घोड़ा हरनागर प्रदान करती है।

जगनिक कन्नौज के लिए प्रस्थान करता है साथ में रानी मल्हना का पत्र-लिखित संदेश था। पृथ्वीराज को अपने गुप्तचर द्वारा यह मालूम हो जाता है कि जगनिक आल्हा-ऊदल को सूचना देने कन्नौज जा रहे हैं। अतः वह धांधू तथा चौंड़ा को नदी बेतवा पर मार्ग में सैन्यदल के साथ तैनात कर देते हैं, जिससे जगनिक कन्नौज सूचना न पहुँचा सकें। कारण यह था कि आल्हा-ऊदल का महोबा आना, पृथ्वीराज की पराजय का प्रतीक था। जब जगनिक नदी बेतवा पर पहुँचता है तो वहाँ चौंड़िया-राय और धांधू के साथ उसका संग्राम होता है। उन्हें पराजित कर जगनिक आगे बढ़ता है। मार्ग में कोड़हरि का राज्य था। जगनिक विश्राम करने के लिए एक वृक्ष के नीचे सो जाता है, तो कोड़हरि का राजा गंगा ठाकुर उसके घोड़े हरनागर में चुरा लेता है। घोड़ा था ही ऐसा। पता लगने पर वह वापस कर देता है क्योंकि राजा चन्देल से वह सम्बन्ध खराब करके अपना सर्वनाश नहीं कराना चाहता था।

मार्ग तय करने के बाद जगनिक कन्नौज नगर पहुँचते हैं । सुन्दर घोड़े को देखकर लोग लालायित हो जाते हैं । घोड़े की सूचना जयचंद के दरबार में पहुँचती हैं । राजा जयचंद लाखन को जगनिक का सामना करने के लिए भेजते हैं । लाखन जब जगनिक के समक्ष उपस्थित होते हैं तो वह सारा महोबा का समाचार सुनाता है और आल्हा से मिलने की बात कहता है । पहले तो लाखन को उस पर सन्देह होता है, बाद में मल्हना का पत्र लेखकर वह उसे आल्हा के पास रिजिगिरि[1] (कन्नौज) प्रेषित कर देते हैं ।

रिजिगिर के फाटक पर पहुँचकर जगनिक आल्हा के पास सन्देश पहुँचाते हैं । जबतक दरवान वापस आता है जगनिक स्वयं फाटक पार करके आल्हा की कचहरी में उपस्थित हो जाते हैं । जगनिक को देखकर आल्हा उन्हें अपने सीने से लगा लेते हैं तथा महोबा का हालचाल पूंछते हैं । जगनिक रानी मल्हना का दिया गया संदेश बयान करते हैं तथा पत्र प्रस्तुत करते हैं । पृथ्वीराज द्वारा महोबा की घेराबन्दी का समाचार उन्हें क्रोध से उत्तेजित कर देता है ।

रानी सोनवां तथा देवल को भी जगनिक के आने का समाचार मिलता है । महलों में भोजन तैयार होता है । आल्हा-ऊदल इन्दल देबा आदि सभी जगनिक से गले मिलकर भोजन करते हैं । इधर आल्हा महोबा जाने की तैयारी करते हैं । इसी समय आल्हा जगनिक से सिरसा का समाचार पूंछते हैं । मलखान की हत्या का समाचार सुनकर आल्हा को परमाल पर क्रोध आता है । उनके अनुसार- परमाल ने मलखान की हत्या के समाचार से अवगत क्यों नहीं कराया । इसके साथ ही उन्हें अपने अपमान की याद आती है । अतः वह महोबा जाने से इन्कार करने लगते हैं ।

जब जगनिक और ऊदल आत्महत्या के लिए तैयार हो जाते हैं तब विवश होकर आल्हा महोबा के लिए तैयारी करते हैं । चूंकि आल्हा को दुर्दिनों में जयचंद ने सहारा दिया था, अतः उनकी आज्ञा लेना भी आवश्यक था । अस्तु आल्हा जयचंद के दरबार में आज्ञा लेने जाते हैं । जयचंद यह नहीं चाहते थे, कि आल्हा वापस महोबा जाएं क्योंकि उनकी शक्ति पर जयचंद को भरोसा था । उन्हें यह भी विश्वास था, कि विषम परिस्थितियों में आल्हा हमारी मदद करेंगे । इसलिए जयचंद ने आज्ञा प्रदान

---

(1) रिजिगिर : कन्नौज की एक जागीर, जहां पर आल्हा-ऊदल रहते थे ।

करने से साफ इंकार कर दिया तथा आल्हा को यह कहकर कैद करवा लिया कि उन्होंने गांजर का हिसाब चुकता नहीं किया है ।

आल्हा की कैद का समाचार सुनकर ऊदल आग-बबूला हो जाता है तथा जगनिक को साथ लेकर जयचंद की कचहरी में आ धमकता है । ऊदल के आक्रोश पूर्ण नेत्रों तथा जगनिक की वीरता परीक्षण-दृश्य देखकर जयचंद भयभीत हो जाते हैं और सहर्ष महोबा जाने की आज्ञा देते हैं । गांजर लड़ाई में ऊदल ने अद्भुत वीरता का परिचय देकर गांजर के सभी राजाओं को बन्दी बनाकर जयचंद की अधीनता स्वीकार करने के लिए विवश कर दिया था तथा बारह वर्ष की बकाया कर की धनराशि वसूल की थी । इसी लड़ाई में नैनागढ़ के जोगा-भोगा वीरगति को प्राप्त हो गए थे । आल्हा का प्रिय घोड़ा पपीहा घायल हो गया था ।

जयचन्द से आज्ञा लेकर, ऊदल लाखन को साथ ले जाने का प्रस्ताव रखते हैं । इस विषय में जयचन्द कहते हैं कि उन पर माता तिलका का अधिकार हैं । अतः लाखन को साथ लेने की आज्ञा माता तिलका से ही प्राप्त करें । चूंकि लाखन ने गांजर युद्ध में ऊदल से शपथ ग्रहण की थी कि- वे महोबा देखने उनके साथ अवश्य चलेंगे और हर मुसीबत में साथ देंगे । ऊदल और जगनिक माता तिलका के महल में जाते हैं । वहीं लाखन से मुलाकात होती हैं । महोबा का समाचार सुनकर लाखन अत्यन्त प्रसन्न हो जाते हैं, क्योंकि पृथ्वीराज से संयोगिता का बदला लेने और अपनी वीरता दिखाने का उनके लिए यह स्वर्णिम अवसर था ।

माता तिलका पहले तो लाखन को महोबा जाने के लिए आज्ञा प्रदान नहीं करती हैं, परन्तु ऊदल का आक्रोश देखकर वह कहती हैं कि- विवाह के बाद पत्नी का अधिकार पति के ऊपर ज्यादा होता है । अतः आज्ञा देने की अधिकारिणी लाखन की पटरानी कुसुमा है । अब लाखन और ऊदल कुसुमा के महल में पहुँचते हैं । कुसुमा गहन निंद्रा में सो रही थी । अपने स्वामी को अनायास अपने पास देखकर आश्चर्य चकित हो जाती है तथा अनायास आने का कारण पूंछती है । लाखन सारी बातें बताते हैं । वह ऊदल को दिए गए वचनों के बारे में भी अपनी प्रिया को बताते हैं ।

लाखन की पटरानी कुसुमा अभी नवपरिणीता थी, यौवना थी । कामनाओं की दृष्टि से अतृप्त थी । अतः रणक्षेत्र में जाने के लिए वह अपने प्रियतम को आज्ञा कैसे

दे सकती थी । अस्तु वह कह उठती है कि—

घटक चुनरी ना मैली भई, ना धोबी घर गयो पटार ।
लाज न छूटी मेरे नैनन की, कंथा छोड़ि चले परदेश ।
घटा छाय रहि है सबही दिशि, अकिले नींद न ऐहै मोहि ।
बिरह हूक उठि है जियरा में, तब को हरि है पीर हमारि ।§1§

नाना प्रकार से भाव बोध करने पर भी लाखन अपनी प्रिया के प्रस्ताव को ठुकरा देते हैं, क्योंकि वह महा-पराक्रमी था । क्षत्रिय के लिए परम धर्म युद्ध करना और हंसते-हंसते वीरगति को प्राप्त करना है । जिसने तलवार की झंकार के साथ जन्म लिया हो, वह विलासिता के पाश में कैसे परिबद्ध हो सकता है । इसी समय ऊदल भी कुसुमा के समक्ष पहुँच जाते हैं तथा उसे खरी-खोटी सुनाते हैं । विवश होकर कुसुमा लाखन को ऊदल के साथ जाने की आज्ञा प्रदान करती है और कहती है कि- शत्रु को पीठ मत दिखाना, चाहे युद्ध में ही वीरगति को प्राप्त क्यों न हो जाओ । वह यह भी कहती है कि दुनिया में कोई अमर नहीं है । आखिर वह भी तो क्षत्राणी ही थी । वासना का आवरण उसके दिल से अब हट चुकता था । अब केवल प्रश्न कर्तव्य व धर्म पालन का था ।

लाखन हँसी-खुशी अपनी प्रिया से विदा लेकर, माता तिलका तथा राजा जयचंद को प्रणाम करके युद्ध का डंका बजा देते हैं । गुजरातिन मुरही हथिनी को सजाकर रानी तिलका उसका तिलक करती है । इधर आल्हा, ऊदल, देवा, जगनिक माता देवल, इन्दल तथा फुलवा व सोनवां के साथ तैयार हो जाते हैं । राजा जयचंद गांजर के वीर राजा, धनुवां तेली तथा ताल्हन सैयद आदि को भी लाखन के साथ जाने की आज्ञा देते हैं । चूंकि लाखन अपनी विधवा माता तिलका का इकलौता बेटा था, अतः राजा जयचंद बार-बार ताल्हन सैयद से लाखन का उचित संरक्षण करने का अनुरोध करते हैं ।

इस प्रकार लाखन की कटीली सेना बड़े-बड़े पराक्रमी वीरों के साथ महोबा के लिए प्रस्थान के लिए तैयार होती है । आल्हा का समस्त परिवार भी साथ में था । अगला युद्ध लाखन की अद्भुत वीरता का परिचायक है । कन्नौज से प्रस्थान करने के पूर्व लाखन अपनी सेना को संबोधित करते हुए उसका मनोबल बढ़ाते हैं । इस प्रकार

---

§1§ बड़ा आल्हखण्ड : पं. सीताराम कृत, पृ. 605.

शुभ मुहूर्त में सेनाएँ महोबा के लिए प्रस्थान करती हैं ।

- -

संदर्भित ग्रंथ : महाकवि जगनिक कृत- लोकगाथा काव्य आल्हा -
§आल्हा मनौआ प्रसंग§ - लोकनाथ द्विवेदी "सिलाकारी" ।

--:****:--